ज़ुबैदा (2001)

निर्माता/निर्देशक : **श्याम बेनेगल**

भाषा : **हिन्दी**

संगीत : **ए. आर. रहमान**

अवधि : **2 घंटे 30 मिनट**

श्याम बेनेगल निर्देशित फ़िल्म *ज़ुबैदा* एक युवा बेटे रियाज़ (रजित कपूर) द्वारा अपनी मां, ज़ुबैदा (करिश्मा कपूर) के जीवन को जानने की दास्तान बयान करती है।

फ़िल्म की कहानी 1950 के दौर की है। ज़ुबैदा फ़िल्म निर्माता सुलेमान सेठ की इकलौती बेटी है। अपने पिता को बताए बगैर ज़ुबैदा अपने पिता की दोस्त व फ़िल्म एक्ट्रेस रोज़ (लिलेट दुबे) की मदद से 'बंजारन' नाम की फ़िल्म में एक नृत्य-अभिनय करती है। सुलेमान सेठ को जब इस बात का पता चलता है तो वह ऐतराज़ करते हैं और ज़बर्दस्ती उसका निकाह अपने दोस्त के बेटे, महबूब आलम के साथ करवा देते हैं।

ज़ुबैदा इस निकाह से खुश नहीं है, वह एक आज़ाद और जीवंत ज़िन्दगी बसर करना चाहती है। शादी और उससे जुड़ी पाबंदियां उसे रास नहीं आतीं। ज़ुबैदा की महत्वकांक्षा उसे एक अच्छी बीवी बनने से रोकती है पर फिर भी वह पति के साथ एक सजी-संवरी गुड़िया-नुमा ज़िन्दगी को सार्थक बनाने की कोशिश करती है। वक्त गुज़रता है। किसी आपसी पारिवारिक मनमुटाव के कारण ज़ुबैदा का पति उसे मजबूरन तलाक दे देता है और ज़ुबैदा अपने बेटे रियाज़ को लेकर मायके लौट आती है।

तलाकशुदा ज़ुबैदा की मुलाकात महाराजा विजेंद्र सिंह (मनोज बाजपेई) से एक पोलो मैच के दौरान होती है। महाराजा ज़ुबैदा की खूबसूरती के कायल हो जाते हैं और उससे शादी करने की पेशकश करते हैं। एक सुनहरे, आज़ादी भरे जीवन की कल्पना में खोई ज़ुबैदा अपने बेटे को अपनी मां (सुरेखा सीकरी-रेगे) की सुपुर्दगी में छोड़कर महाराजा के साथ फतेहपुर चली जाती है। फतेहपुर में महाराजा की पहली पत्नी, महारानी मंदाकिनी (रेखा) उसे शाही तौर-तरीके और सलीका सिखाने का प्रयास करती है जो ज़ुबैदा को नागवार गुज़रता है।

ज़ुबैदा की दुनिया में केवल मुहब्बत, आज़ादी व शान-औ-शौकत की ख्वाहिश है। वह जलन और ईर्ष्या के चलते अपना पत्नी-हक़ राजा की पहली पत्नी के साथ नहीं बांटना चाहती। वह चाहती है कि महाराजा के जीवन का केंद्र वही रहे परन्तु ऐसा नहीं होता। अपनी रियासत की राजनैतिक बागडोर संभालने और उससे जुड़ी सत्ता कायम रखने में महाराजा रानी मंदाकिनी को अपने साथ रखते हैं जो ज़ुबैदा को तकलीफ़ देता है। आगामी चुनाव अभियान में भी राजा मुसलमान ज़ुबैदा की जगह अपनी हिन्दू रियासत में रानी मंदाकिनी के साथ जाने की तैयारी करते हैं। पर ज़ुबैदा भी हार मानने वाली नहीं है। वह ज़बर्दस्ती महाराजा के साथ हेलिकाप्टर में बैठ जाती है जिसके दुर्घटनाग्रस्त होने में उसकी मौत हो जाती है।

ज़ुबैदा में निर्देशक ने एक ऐसी ज़िद्दी और बुलंद हौसले वाली अल्हड़ मुस्लिम लड़की की कहानी प्रस्तुत की है जो अपनी शर्तों पर व अपनी मर्ज़ी अनुसार जीवन जीने का साहस करती है। समाज के बनाए ढर्रे पर नाक की सीध में न चलकर वह अपने दिल से सोचती व समझती है और

यही उसकी सबसे बड़ी ताकत है। सख्त पाबंदियों वाले रईस परिवार में पली होने के बावजूद वह उन सभी वर्जित बातों को करती है जिसकी उसे मनाही है, फिर चाहे वह फिल्म में अभिनय हो या पाटियों में डांस। अपने तरीकों से कभी प्रखर कभी मुखर होके वह वर्जनाओं के सूत्रदारों को चुनौती भी देती है।

ज़ुबैदा एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसकी जीने की चाह व महत्वकांक्षा इतनी प्रबल है कि उसमें अपराध-भाव नहीं है। उसमें एक दृढ़ निश्चय और रवानगी है, रुमानियत और कुछ भी कर गुज़रने की ज़िद है जो अंत में उसकी मौत के साथ ही खत्म होती है। ज़ुबैदा की यौनिकता भी एक नदी की तरह स्वछंद और कोमलता की तलबदार है जो इस फिल्म के माध्यम से बखूबी दिखाई गई है।

फ़िल्म के सभी किरदार अपने उत्कृष्ट अभिनय के लिए दर्शकों के मन पर छाप छोड़ते हैं। ज़ुबैदा के चरित्र में यह करिश्मा कपूर की एक बेहतरीन अभिनीत फ़िल्म है। यह पूरी टीम का मिला जुला प्रयास ही है कि जज़्बाती और जटिल सीन भी सहज और नाटकीयता रहित लगते हैं। अपनी बाकी की फ़िल्मों की तरह इस फ़िल्म में भी श्याम बेनेगल ने नारी मन के विविध भावनात्मक उतार-चढ़ाव को बड़ी मार्मिकता के साथ उभारा है। चरित्रों ने अपनी आंखों के माध्यम से खुशी, गम, ईर्ष्या, रोष, गुस्सा व मज़बूत इरादे व्यक्त किए हैं। फ़िल्म का संगीत कर्णप्रिय व नयापन लिए हुए है।

फ़िल्म में एक बात जो दर्शकों को भाती है वह है ज़ुबैदा व उसके पिता के परिवार के बीच विचारों का संघर्ष तथा बाद में ज़ुबैदा व महाराजा के नज़रिए को लेकर उथल-पुथल। फ़िल्म का अंत भी दर्शकों को सोचने के लिए बाध्य कर देता है। ज़ुबैदा की मौत एक दुर्घटना में होती है या फिर यह उससे निजात पाने के लिए रची गई साज़िश है? अगर साज़िश तो किसकी, महारानी मंदोदरी की, अपनी शान और रियासत की मर्यादा बरकरार रखने की कोशिश। या खुद ज़ुबैदा की अपने महाराजा और प्रेमी को सबसे छीनकर ले जाने और अपनी हार को जीत में बदलकर अपनी मर्ज़ी का करने का प्रयास। ये फैसला निर्देशक ने दर्शकों के ऊपर ही छोड़ दिया है। हमें तो ये लगता है कि ज़ुबैदा ने अपने वजूद से ही अपनी ख्वाहिशें पूरी करने की कीमत अदा कर दी है। एक सराहनीय और प्रेरणादायक फ़िल्म की श्रेणी में इसे गिना जाना यकीनन सही रहेगा।

-जुही जैन

जुबैदा फ़िल्म के एक दृश्य में रेखा, करिश्मा कपूर व मनोज बाजपेई